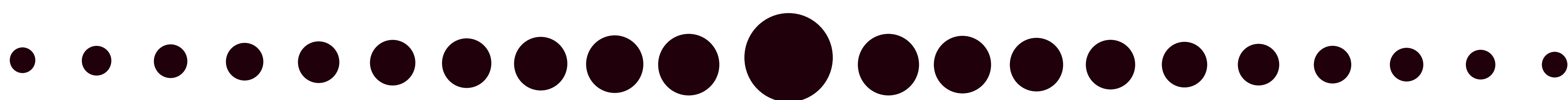


चानिन

राज किशोर मिश्र

चाननि
(कविता- संग्रह)

रचनाकार
राज किशोर मिश्र



ISBN: 978-93-5627-356-6

दाम :₹२००/-

प्रथम संस्करण :२०२२

रचनाकार एवम् प्रकाशक :राज किशोर मिश्र

ग्राम :अड़ेर डीह,
पोस्ट :अड़ेर हाट
जिला :मधुबनी (बिहार)

(भारत मे मुद्रित)

पोथीक 'नाओँ: चाननि
रचनाकार –राज किशोर मिश्र

आमुख

प्रस्तुत पोथी 'चाननि ' हमर आठम साहित्यिक कृति अछि
आ मैथिली मे दोसर। एहि मे, पन्द्रहटा कविताक संग्रह छै
जे मनुखक'जीवन सँ जुड़ल विविध विषय सभ पर आधारित अछि।

प्रकृति, मनुक्खक स्वभाव, नव-संस्कृति, समकालीन
समाजिक विषय एवम् मनुखक जिनगी सँ सरोकार रखैत आरो दोसर विषय सभ पर आधृत एहि कविता सभक रचना कएल गेल अछि , जे रोचकता के समेटने, नीक संदेश 'जनमानस धरि पहुँचओनिहारिकक'काज कए रहल अछि।

हम अपन पत्नी श्री मती अनिता मिश्र कैँ प्रति कृतज्ञता
ज्ञापित करैत छी ,जिनकर अथक ओ प्रशंसनीय प्रयास
सँ ,एहि पोथीक समग्र टंकण -कार्य सम्पन्न भेल। तदर्थ,
ओ बहुत धन्यवाद आ प्रशंसा के पात्र थिकीह।

हमरा विश्वास अछि, सुधी पाठक लोकनि कैँ ई पोथी
पसिन पड़तैन्ह आ ओ निश्चय आशीर्वाद देताह।

धन्यवाद ,

विनीत

राज किशोर मिश्र

चानानि

अनुक्रमणिका

1. इजोरिआ

देखलहुँ, राति में टहाटही
इजोरिआ सँ आँगन पाटल छल,
बुझि पड़ल जेना जे चारु चित्र सभ
रजत -पटल पर साटल छल।

तरेगन सबहक बीच मे देखलहुँ,
छथि मयंक, अध्यक्ष, बनल,
ताकू कतहु, अवनि सँ अंबर,
छल, सुंदर शुक्ल -पक्ष सजल।

ज्योतिर्मय छथि तारागण,
मुदा, विधुक बात अछिए अलग,
की भव्य चाननि निकलि रहल!
अकाशे नहि, वसुधो जगमग।

अछि मोह जागल, चाननि मे,
तएँ,ओतेक दूर सँ आएल अछि,
धरा केँ धवल, शुभ्र रंग सँ,
गहि-गहि, खूब सजाएल अछि।

विभावरी मे घोर तिमिर,
इजोत पीबि गौरबाएल छल,
भ' गेल निस्तेज इजोत -पुंज,
अन्हार सँ ओ घायल छल।

बनि वीरांगना, एहेन क्षण मे,
कए देलक क्षीण, तमता के,
बिधुआएल रजनी करैत छलि
स्वीकार चाननिक 'प्रभुता के।

व्योम सँ ल'क'वसुधा धरि
लगै छल, हो शुभ्र -रश्मि सेतु,
इजोरिआ इजोत -सनेस अनलक,
नभ सँ वसुन्धरा के हेतु।

किंवा, दिन आ' राति के,
लएलक कोनो , "मिलानक' विधान,
भए अवतरित नभ -लोक सँ,
जनु कएलक वसुधा के चुमान।

आँगन मे देखलहुँ, कतेक रास
उज्जर -इजोत जे पसरल छल,
झक -झक अँगना चमकि रहल,
जेना ,अन्हरिया ससरल छल।

बाहर चलि देखलहुँ, पोखरि के,
भरि पोख, उदक सँ छल भरल,
परञ्च , समग्र सरोवर के
छल तिता देने ओ रश्मि,तरल ।

जल -पुष्प,प्रस्फुटित तड़ाग मे,
डूबल छल सोम-सुंदरता मे,
जल -जीव किछु, छल व्यस्त तखनो,
छल लागल पेट बेगरता मे।

तरु-शोभा देखए लेल, निमंत्रण,
इजोरिआ द्वारा, आएल छल,
देखबा मे आएल साफ, मुदा,
सभ गाछ -बिरिछ ओँघाएल छल।

कखनो, कोनो चिड़ै-चुनमुनक'
ध्वनित होइत छल, बाजब, खखसब,
कखनो, झाँपि कुमुदबांधव के,
छोटका मेघ -खण्ड के रभसब।

बाध-बोनक एक छोर सँ
देखबा अबैत छल दोसर छोर,
इजोरिआक' झलफल इजोत मे,
देखाइ जजाति, बिनु भेने भोर।

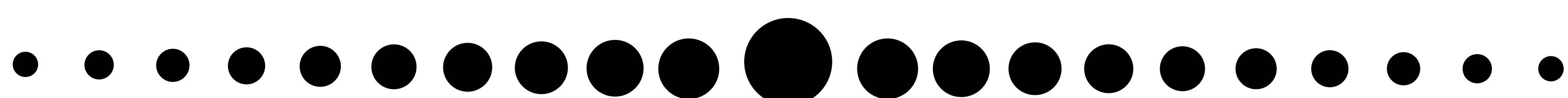
इजोरिआ, कखनो, ताल लगाबए,
भ्रम प्रकट कए दैत छल,
भए गेलै भोर कि छलै राति,
निजगुत करब, नहि छलै सरल।

चाननि के वसुन्धरा सँ,
देखिऔ, कतबा छै सिनेह,
उज्जर -दपदप इजोत सँ,
करए सिंगार, पृथ्वीक देह।

देखि चानक 'प्रतिबिम्ब,स्वयं मे,
सलिल गहि लेल, धवल सौंदर्य,
छलै जनैत, ई अछि क्षणभंगुर,
तैओ,ओ मोहित छल, आश्चर्य!

अमित सौंदर्य इजोरिआ के,
व्याकुल छल केने,मन के,
छल बुझल, किछुए दिन टिकतै,
ई त'शुक्ल -पक्ष, धन के।

छलै ग्रसित केने चलि जाइत,
अन्हार, इजोत के, जोर सँ,
तिमिर -छल-पत्र, देखि रहल छल,
इजोरिआ, भरल नोर सँ।



2.नव-संस्कृति ओ गाम

तेहन पाठ ने पढ़लहुँ बौआ ,
बिसरि गेलहुँ अहाँ अपन गाम,
माए -बाप दुहू बाट तकैत छथि ,
कहिआ, पूत अओता एहि ठाम।

कोना -कोना, बाबूजी पोसलथि,
कुटिआ -पिसिआ कैलथि माए,
'रहि जाइ अपने भुखलो, मुदा
नीक -निकुत सभ बौआ खाए'।

सुख -दुःख काटि अहाँ के पढ़ेलथि,
होन्हि सदैव 'हाकिम बनि जाउ,
ओहन प्रतिष्ठा अहाँ पाबि ली,
जबार बाजि उठय 'बाह बाउ '!

दिन -राति, अहूँ कैलहुँ मेहनत,
आ, पओलहुँ नीक नोकरी ओ पद,
पैघ घर मे बिआह भेल, आ
नमहर अहाँक होइत गेल कद।

एक बेर, आएल रही गाम,
त' बिसरल रही सभ लोकाचार,
के गोर लगै अछि पएर छूबि?
लागथि माए -बाप, आब भार।

पास -पड़ोस,हमहूँ सभ छलहुँए,
भेटब तकर रहैत छल, आस,
घुमि -घुमि आपस गेलहुँ कतेक बेर,
कतबो केलहुँ, भेँटक प्रयास।

कनिआँ के सभ लागन्हि देहाती,
सुनलहुँ, बजथिन्ह -'ई केहन ठाम?
कहाँ चलैत छै पंखा -एसी?
चूबि रहल अछि भरि दिन घाम'।

एतए,लोक तीतल रहैत अछि,
भावना के वृष्टि मे,
बाह्माडम्बर के देखैत अछि?
अपनापन के सृष्टि मे।

परञ्च, पद के अहंकार, आ
नव -धनाढ्यता -गरमी,
बाँहि ममोड़ि दैत छलै ई,
सरल-संबंध क' नरमी।

बुझैत छलहुँ,' पड़ोसी अछि याचक,
हमर सुख -सुविधा छीन लेत ।
प्राचीन युगक पहिरन -ओढ़न, आ,
दरिद्रता दै छै ई खेत' ।

लागल, कोना लोक खाइत छै?
नीचाँ, माटि पर बैसि क',
अपनैती कतेक छैक गहींर?
देखतीऐ ओहि मे पैसि क'।

' ई हेलो –हाइ'के दुनिया नहि ,
ने, औपचारिकताक बनावटी खेल,
गाम मे नहि, छद्म –छल,
छै ,बन्धुत्व आओर हृदयक मेल ।

सुख –दुःख बाँटि, जीबै छथि सभ किओ,
आडम्बर नहि, ने टोप –टहङ्कार,
नूतन –संस्कृतिक चश्मा पहिरि,
मौलिकता किएक, लगैछ बेकार?

नव्यता, दए रहल बहुत,
त', छिनबो केलकै बहुत रास,
सुख –सुविधा के मतलब की?
बनि जाए भावना ओकर दास?

एखनो, जीबैत अछि भावना,
गामक निष्कपट पानि मे,
घोँघाउझ, वितण्डा होइत छै,
मुदा संग, लाभ ओ हानि मे।

प्रकृति -छाहरि मे लोक जीबैत अछि,
बहैत रहै छै, सुंदर बसात,
मौका पड़ला पर ठाढ़ होइत छै,
एहि ठामक सुखलो , खढ़ -पात।

लोकक सदिखन नोर खसैत छै,
दु:ख जँ आबहु ककरो माथ,
टुअरो,एहि लेल नहि बुझैत अछि,
गाम मे अपना के अनाथ।

ई नहि छै ;नूतनता के
विरोधी होइत अछि गामक लोक,
मुदा, पसिन ईहो नहि छै,
देखौआ संस्कृति क' चाटब फोंक।

जीवन मे ऋजुता के कारण,
लम्फ -लम्फा ने टिटम्भा,
कनिए टाका सँ खर्च चलै छै,
देखि लगै छै अचम्भा।

कहाँ कहैत छी, गामक जीवन मे,
एकछाहे गुण अछि सभटा,
स्वास्थ्य आओर आन असुविधा,
आ, चार पर छारल खपटा।

लोको की सभ सज्जने छथि?
कतेको भरल अछि दुर्जन ,
बेर पर त' छिटकि जाइत छथि,
कतेको परिजन -पुरजन।

अहूँ त' एहि माटि -पानि क',
प्रसाद पाबि आगू बढ़लहुँ,
मुदा, बिसरलहुँ, निर्मोही भ',
प्रथम -पाठ , जत'पढ़लहुँ।

हेरा लेलहुँ सिनेह ओ श्रद्धा,
अपनहि रीति -रेबाज लेल,
अनसोहाँत लगैत अछि, आओर
अनठिया परम्परा भेल।

बाहरक चकाचोन्ह मे नहि
चोन्हराइछ अपन संस्कृतिक नयन,
संस्कार -सुधा रक्त मे अछि,
ने सुखाएत, आ ने छोड़त मन।

जाहि वायु मे प्रथम साँस
लेलहुँ, ओ कोना आब जाएत?
जाहि माटि मे ओतेक खेलेलहुँ,
बंधन त' ओ, ओझराएत।

स्वभाव -सिद्ध छै;संस्कृति सभ
आपस मे ओ त' फेँटेतै,
मुदा, मूल कमजोर हेतै त',
फुनगी मे जड़ि भेटेतै?

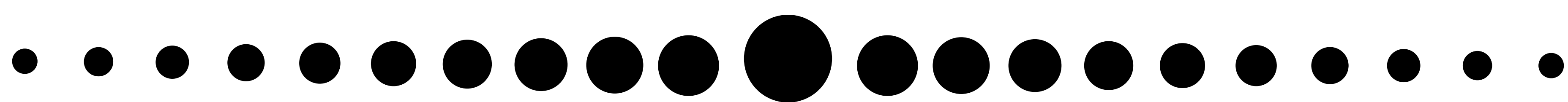
जे छी से त' छीहे, आ
जे छलहुँ सेहो रहबे करब,
लय आ ताल मिला दिऔ,
अन्तर्द्वन्द्व सँ किएक लड़ब ?

विरोधाभास नहि दू संस्कृति मे,
ठीके अछि, अपना -अपना ठाम,
मुदा, सिनेह, अपनापन के',
देखब, नहि खसए कखनहु खाम्ह।

डीह -डाबर बदलि लेलहुँ,
बदलल अहाँक जबार,
जन्म -भूमि, मुदा नहि बदलत ,
बदलिओ जाएत कपार।

'उन्नति के अंतिम श्रृंग चढ़ू',
अपनैती नहि होएत बाधक,
निज माटिक बंधन -आकर्षण,
सँ शक्ति पबैत छथि सभ साधक।

हम सभ भरि-भरि दए रहलहुँ अछि,
मोन -हृदय सँ आशीर्वाद,
जे किछु अनुरोध छल सभहक,
ओहि मे अछि भरल, सिनेहक सोआद।



3. सुख

हम ताकि रहल छी पता सुखक '
भेटत त' समाद पठाएब,
डिगडिगिआ पीट क' सभ केँ,
जा-जा क' समाद सुनाएब।

अपना तरहेँ ताकि रहल छथि,
सभ किओ सुख संसार मे,
अपन -अपन छन्हि बाट सबहक,
लागैन्हि जे नीक, विचार मे।

सुख पाबै छथि किओ गीत गाबि,
दए उपरागे,किओ पाओल सुख,
सुन्दर -सुंदर, सौंदर्य प्रसाधन
सँ किओ सजबैत ,छथि निज मुख।

घोड़ा -हाथी साजि कए,
होइत अछि किनको, सत्कार,
किओ, पाबि केवल फूल -पान,
क' दै छथि जयजयकार।

किनको त' दए रहल अछि सुख,
सम्पत्ति के भंडार,
आ, किनको लए धन -संग्रह,
पूरापूरी,बेकार।

औपचारिकता निबाहब,
किनको लेल सर्वोच्च,
जीवन बिता लैत छथि,
रखैत ओकरे रोच।

गुमान पोसय मे किनको,
रहैत छन्हि बड़ भारी हुलास,
निज अहंकार क' तुष्टि मे,
छथि पबैत सुख ओ, बहुत रास।

किनको विधु क' चाननि निहारि,
होइ ने छन्हि, सुख समटल,
मॉलक 'कृत्रिम इजोत देखए,
किओ ,ओकरे लेल रकटल।

व्योम मे पसरल, तारामंडल,
ओ दृश्य, किनको छू जाइत अछि,
ओही के, किओ देख-देख क'
जोर -जोर, ओँघाइत अछि।

भौतिक सुख -साधन, किनको,
होइत छैन्ह प्राण -समान,
संसार -विषय सँ बैरागी,
छोड़बैत रहैत छथि जान।

भोकारि पारि कनैत छथि किओ,
छोड़ैत काल निज गाम,
किनको अभिलाषा रहैत छन्हि,
जाइ दूर, कोनो ठाम।

अठोङर कूटि निबाहैत छथि,
बिआहक 'सभ रीति -रेबाज,
आ', सुख दैत छन्हि किनको,
परम्परा तोड़ 'के काज।

मुदित होइत छथि पाबि क'
अपनापन -अनुबंध,
किनको नीक लगैत छन्हि,
राखब बाँतर संबंध।

व्यक्ति -व्यक्ति पर परिभाषा,
बदलैत रहैत अछि सुखक ',
किनका लेल की सुख? निर्भर अछि
अभिलाषा ओहि मनुखक '।

मान, प्रतिष्ठा पाबि जगत् मे,
जयजयकार कराबी,
खाँहिस जिनकर, कीर्ति मे
त्रिलोकक सुख हम पाबी।

कर्त्तव्य -पालन मे जिनका,
संसारक, सभ सुख भेटल,
सुख पओलथि, उपकार, त्याग मे,
अनकर दु:ख जे मेटल।

किनको मोन मे, सुख ओ दु:ख,
दुहूक मोल, समतूल अछि,
हर्ष -विषादक ई समता
वैराग्य -भाव के मूल अछि।

मुदा, उठैत अछि प्रश्न आब,
वास्तव मे, सुख ककरा कही?
विषय अछि गूढ़, कठिन अछि उत्तर,
की छै गलती? की सही?

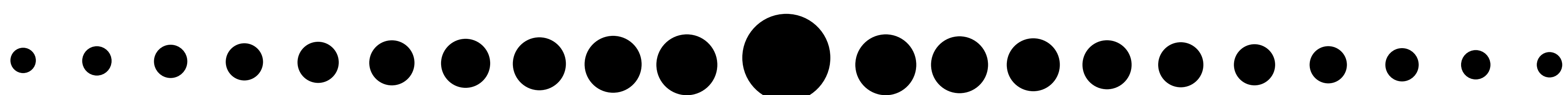
होइछ सापेक्षिक, सुख क' रूप,
हर व्यक्तिक अपन छन्हि परिभाषा,
मुदा, प्रत्येक सुख अवश्य बुझय,
मानवता आ कानूनक भाषा।

जँ मोन खुश, त' बरसैत छै,
सभ सुख के पुष्प, अँगना मे,
एहि फूलक' गमक, गमकैत छै,
डिह –डाबर, हन्ना –हन्ना मे।

कथमपि जरूरी अछि ने ई,
सम्पत्तिए सँ निकलैत अछि सुख,
आओर, अकिंचन के दोआरि,
डेरा देने बैसल अछि दुःख।

हर्ष –विषाद, समतुल्य बूझि,
चलैत छथि जे कर्तव्य क' बाट ,
सुख ओतहि भेटतन्हि , जे चलाबथि,
गृहस्थी किंवा राजपाट।

गला –गला क' सुख ओ दुःख
मिलाओल जाए समतुल्य,
सोच बनत एहि मिश्रण सँ,
होएत ई सोच, अमूल्य।



4. आमक गाछी

आमक'गाछ बेकल कतेक छल,
छलै देह पर, अगबे पात,
मञ्जर नहि फुलेलै ,कत दिन,
भए गेल छलै फरो निपात।

आबि गेलै ऋतु -संधि-काल,
भए जीर्ण, शिशिर छल जाएबला,
शुभागमन छल ऋतुराजक ',
भए युक्त, सकल मोहक कला।

सजलए मञ्जर, आम्र तरु पर,
पिअर वसन सँ जनु सिङार,
किंवा, लगैत छल आम गाछ,
पहिर लेने हो कनक-हार।

ई, सरिपहुँ, स्वागत-गीत छल,
जे गाबि रहल छलि कोकिल,
अभिनंदन -पर्व छल मना रहल,
कौआ ,सूगा ,सभ किओ मिल।

गाछी त 'छल लगभग निर्जन,
पड़ैत रहै छलै, सभतरि , भम्ह,
सुन्न कलम मे गाछो सभ के,
होइत छलै की दुःख कोनो कम?

आमक'गाछी क' शोभा-सुन्नर
जेना लगैत छल, हेरा गेलै,
स्थगित जेना शुभ -काल भेल हो,
एलैक, जखन मजरा गेलै।

फूल -फल क' प्रतीक्षा सँ,
व्यथित छलैक गाछक हृदय,
मोन होइत छलै, गाबी
गीत कोनो, उदासीक लय।

आमक 'गाछी क' परिपार्श्व आब,
नव -संस्कार सँ भरि गेल,
आनन्द -बसात बहए लागल,
झुमि -झुमि तरु सभ तरि गेल।

चहल -पहल बढ़ि गेल, भरल
उत्साह -लहरि सँ गाछी,
ओगरबाह की? सब किओ कहता,
' गाछी लेल ,बिदा छी। '

बाँसक मचान आ खोपड़ी मिलि,
एखनुका त' बूझू, इएह दलान,
पर्णकुटी मे अछि भरल,
अमृतफल प्रति कतबा सम्मान?

सुमधुर सहकार, बहुरंग मे,
आम्र तरु पर अछि सजल,
पाकल, सुपाकक'लागल पथार,
भरि गाछी, धब -धब, खसि रहल।

पाबि पवन के स्पंदन,
लागल नाचय सभ डारि -पात,
गाछ स्वयं किछु गाबय लागल,
आम -मास बड़ हरखक बात।

कए गोटे पबैत छथि अर्थ -लाभ,
होइत छथि मुक्त ऋण -पत्र सँ,
बहुतोक अर्थ मजबूत होइत छन्हि,
आमक एहि लघु -सत्र सँ।

जाहि गाछ पर आम जतेक अछि,
ओ ओतबे लिबल अछि,
विनीत, विनम्र होइते छथि, जिनका
जतेक विभव, धी-बल अछि।

आम-काल क' अवसान समय,
छलै आबि गेल लगीच,
भए जाइत अछि मद्धिम, जहिना
अस्त, मार्तण्ड -मरीचि।

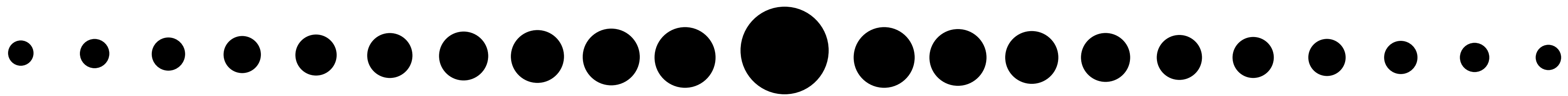
शुरुआत भेल आयोजन के,
गाछी मे संध्या -भोजक, '
ई कार्यक्रम रोमांचक छल,
मनमोहक कतेक, ओ रोचक।

टुटतैक गाछ क', बाँचल आम,
उखड़तै ,खोपड़ी ओ मचान,
गाछी के छोड़ि, एकसरे,
सब करतै अपन गृह -प्रस्थान।

छै पसरल एकटा विचित्र शांति,
भ' गेल समग्र गाछी उदास,
एकटक तकैत, गेनिहार केँ,
बिधुआएल, दुःख छै बहुत रास।

व्याकुल छै चित्त उभय -पक्षक,
इच्छा कथमपि नहि छोड़' के,
ने पएर बढ़ै छै ओगरबाहक,
सम्बन्ध ने होइ छै, तोड़ 'के।

गाछी मे पसरि गेलैक उदासी,
निःशब्द वातावरण, गुम -सुम,
टूटल हृदयक उदास स्वर
अश्रव्य, निकालि रहल छल द्रुम।



5.भैआरी

माएक मरला बाद,भ्रातृ द्वय।
केवल पओलक, पितृ -सिनेह,
परिवारक अर्थव्यवस्था के,
एखनो छलथिन्ह पिते, मेह।

कनिके पढ़ि, दूनू भाइ करए
लागल खेती -पथारी,
भ' जाइत छलै, तरकारी -तीमन,
नमहर छलैक, बाड़ी।

ओहि गाम भरि मे, दुहु भाइ,
भ्रातृत्व -सिनेहक, छल प्रतिमान,
बनले रहल, विवाह उपरान्तो,
भ्रातृत्व -अपनापन, समान।

देआदनी के बीच मे,
मेल क' कनिको ने अभाव छल,
परिवार मे सुमतिक जेना,
जबरदस्त, प्रभाव छल।

किछु बरखक पश्चात्, हिनक
पिता क' भए गेलन्हि स्वर्गवास,
बढ़ि गेलै, दूनू भाइ के ऊपर,
उत्तरदायित्व,बहुत रास।

पाइ -टका ल'क' किछु दिन सँ,
मतान्तर भेल, भैआरी मे,
कलह, दलान सँ आँगन आएल,
बाध-बोन, घराड़ी मे।

भनकी लागल किछु गौआँ के,
पओलक जेना सुअवसर,
चढ़बए लागल दूनू दिस,
किछु एमहर, किछु ओमहर।

खेते ल' क' नहि फरिछाएल,
पूर्ण नहि भेल बटबारा,
जुआएल, अँकुराएल अड़ारि,
इरखा सँ भरल, पमारा।

बनल मंतव्य पंचैती के,
झंझट आरो, ओझरा गेल,
वाकयुद्ध, फेर मारि –मरौअलि,
कतेको क' मोन जुड़ा गेल।

केलक मामिला, एक दोसर पर,
गाम क' चर्चा क' विषय छल,
आरो बढ़तै बात, तकर
भारी संशय आ भय छल।

की मोल रहल ओहि भातृत्वक?
जे 'क्षणहि बिका गेल धन क' हाथ,
भैआरी जे उपमान बनैत छल,
टिक ने सकल ओ रातुक प्रात।

नहि रहल सिनेह, अँगना उदास,
अधिपत्य जमा लेलक इरखा,
द्वेष, भुजंग सन, घूमि रहल छल
लपलपबैत जीह बड़का।

एहि अन्हार मे अहंकार,
देखा रहल ओ निज भुज दण्ड ,
शालीनता, भ्रातृत्व के,
किए भोगि रहल छल एहन दण्ड ?

भेलै अंत निर्दोष सिनेहक,
हइर लेलकै ओकरा क्रूर द्वेष,
कुनह, कहू बढ़ि गेलै कते,
आबए धरि -धरि कोन भेष?

चलिते रहलै ओहिना कलेस,
भ' गेलै बन्द आब खान -पान,
टुटैत गेल संबंध सहोदरक'
खसि पहुँचल ,अंतिम सोपान।

जखन,कुमति चढ़ैत अछि सिर पर,
करैछ, सुबुद्धि निर्मूल,
सभटा उनटे होइत छै,
काल होइछ प्रतिकूल।

विनाश, मित्र बनि, बजा लैत अछि,
सभटा, ध्वसं, अनिष्ट,
संकट सँ भरि दैत छै,
दुर्बुद्धि क' भाग –अदिष्ट।

अमंगल भरल, मोन मे,
सोच, कुटिल योजना सँ,
माथा चलैत रहै छै सदिखन,
षड्यंत्र,प्रवंचना सँ।

घोर द्वेषक वातावरण मे,
संबंध खसैत अछि बहुत तेज,
रोकए अबैत अछि मर्यादा,
मुदा, के करतै ओकर परहेज?

कटुता, व्यंग्य भरल मुख सँ,
निकलैत अछि जे, शब्द -वाण,
हृदय बेधि व्रण करैछ तेना,
मोसकिल, ओकर छूटब निसान।

संबंधक अधोपतन सँ,
भए गेल कलंकित भैआरी,
रुकल कहाँ? दूनू कए लेलक,
विनाशक अंतिम तैआरी।

अदनो सँ अदना, भेलै अपन,
भए गेल सहोदर, आन -आन,
अपनापन, इरखा कोना रहतै?
संग -संग दुहू एक मिआन।

कोना, अपन अपना के उजाड़ल ?
लेब 'चाहए ,एक -दोसरक प्राण,
'सहोदर सन ने किओ जगत् मे',
मिथ्या भ' गेल एकर प्रमाण।

काल -चक्र घूमल आगू,
जेठ भाइ पड़ि गेलै बेमार,
इलाज त' चललै,मुदा
अउषधि ने पाबए दुःखक'पार।

भीतरे -भीतरे, लगै जेना,
जड़िआएल छै मन मे कचोट,
छै उठल ,भावना के बिहारि,
मामूली ने ई छोट -मोट।

धिक्कार अछि निज जीवन पर,
जे, अनुज सँ हमरा भेल द्वेष ,
नहि देलिऐ,ओ सिनेह हम,
अधिकार जाहि पर, ओकर अशेष।

बाल्य -काल सँ, छोट भाए के,
करैत छलै ओ कतेक दुलार?
जमल सिनेह जेना घमि क'
बनि नोर, बहय नोरक पलार।

जेना बान्ह, टुटि गेलै मोन मे,
बहि चललै, भ्रातृ -सिनेह क' धार,
भेलै, डुबा देत हृदय -मोन के,
कोना क' उतरब एहि सँ पार?

अपने त' छल मौन, मुदा
ताकए आँखि, हरदम, कोनो बाट,
दुखित जानि, आओत अनुज,
किओ कहने हेतए, बाट -घाट।

इलाज होइत रहलैक, मुदा
स्थिति मे नहि भ' सकलै सुधार,
मोने -मोन, अहुरिआ काटए,
भाए पड़ए मोन, बारम्बार।

कुहरए लागल, कानए लागल,
अंत ओकर, उपस्थित भेल,
मुह मे भाएक नाम एलै,
आ, बाट तकैत, परलोक गेल।

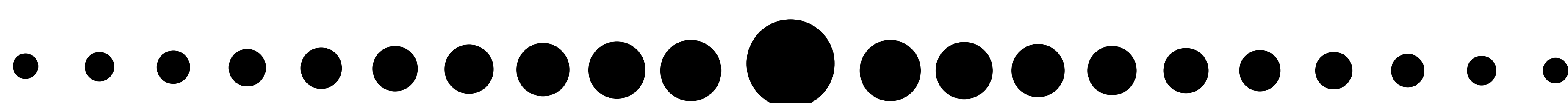
'अंतिम काल 'के खबरि पाबि,
एलैक अनुज, दौड़ल -दौड़ल,
चिचिआइत 'भैआ -भैआ ,'ओ
अग्रज क' पएर पर खसि पड़ल।

पछताइत छलैक, मोन अनुज के,
फटैत छलैक ओकरा कुहेस,
पश्चात्तापक आगि मे,
धधकै, ओकर हृदय -प्रदेश।

"रुसल चलि गेलाह भैआ,
माफीओ ने माँगि सकलहुँ हम ,
सहोदर त' ने होएत दोसर,"
बाजए , नयन नोर सँ नम।

आँखिक नोर द', जमल द्वेष
बनि तरल, खसल धरती पर,
भ्रातृत्वक अपराजित सिनेह,
हरिआए गेल परती पर।

डारि -पात त' सुखा गेलै,
मुदा, सिनेहक जड़ि ने सुखाएल,
पर , अपसोच एहि बात क' जे,
'सारा 'पर किएक फुलाएल?



6.धान

डुमरिक फूल सन भेल, मेघ,
बनि पाहुन, आएल जेठ -मास,
बरसल त' एके अछार, मुदा
शुष्क खेत मे आएल साँस।

श्रान्त भेल गाम, मे बढ़ि गेल,
हाल सँ हलचल खूब जोर,
हर -बड़द वा ट्रेक्टर लए,
कृषक -गण चलला, भोरे -भोर।

खेत चासल गेल, तखन
खसाओल गेल धानक बीआ,
समारला के बाद खतम भेल,
बीआ बाओग करक'क्रिया।

बीआ, माटिक साहचर्य सँ,
पादप बनि बाहर आएल,
जेना छल, अँकुराएल भविष्य
वर्त्तमान बनए लेल, अगुताएल।

ओहि छोट -छिन बीआक गाछ
मे पुष्ट धान नुकाएल छल,
ओकर दिव्य सुन्दरता सँ,
माटिक हृदय जुड़ाएल छल।

खेत जनै ,नमहर भ' क'
चलि जाएत छोड़ि, बीआ हमरा,
जहिना, फूल के दोस बना
छोड़ि, उड़ल जाइत अछि भमरा।

भविष्य क' बिछोह के सोचि -सोचि,
बिधुआएल छल,खेतक'माटि,
मुदा, ओकर सुंदर जीवन लेल
शक्ति -सम्पदा, देलक 'साँठि।

नभ मे बादरि, घुमड़ि -घुमड़ि
गर्जन कए पठबैत छल समाद,
जल -सनेस हम लएलहुँ अछि,
छी पठा रहल, किछु कालक बाद।

नृत्य करैत पाबस चलि आएल,
अहर्निश बरस' लागल पयोद,
सभक खेत मे एक रंग सँ,
परसए बरखा, पानि क' मोद।

रोपा गेल सभ खेत धान सँ,
उपराड़ि, गहींरका, चओर -चाँचर,
हरिअरीक नूआ पहिर बाध सभ,
काढ़ि लेलक हरिअर आँचर।

लिबल, शनैः-शनैः, सीस,
लगचिआए गेल, धानक 'पाकब,
रुखि बदलल, बाध -बोनक,
देखाइत धान, जेम्हरे ताकब।

कतेक विलक्षण, खेत लगैत छलै,
पसरल, पाकल धान,
बरसि रहल, सबतरि, श्री-शोभा,
बाध-बोन, खरिहान।

धान कटल, दरबज्जा आएल,
कोठी, भरल बखारी
सभहक मोन हर्षित छलै,
बाल -वृद्ध, नर -नारी।

धान पाबि कतेको धनिक
देखबै छथि, धन क' अभिमान,
धाने सँ ओ दैत छथि,
नमहर चास -प्रमाण।

तुलसी फूलक 'चाउर के
जतए ,बनैत अछि भात,
गम -गम करए लगैत अछि,
परसाओल जखने पात।

भात -दालि -तरकारी,
आओर, चूड़ा-दही-चीनी,
ई भोजन सभ, सब सँ बेसी
धाने के अछि ऋणी।

भ' जाइत अछि, अमृत -भोजन
जखन बनैत अछि खीर,
खीर खाए, पुरुषार्थ देखाबथि,
कतेको भोजन -वीर।

झट्टा सँ छारल जाइछ, चार,
आ, शय्या कतहु बनैछ, पोआर,
बनैत अछि भोजन पशुक 'लेल,
धानक पोआर, धानेक नार।

चाउर, दूर्वाक्षत क' अंग भए,
बनि जाइत अछि मंत्र द्वारा आशीष,
आशीर्वाद पबैत छथि ओ सभ
पड़ैत अछि जिनकर -जिनकर शीश।

होइछ खोंछि मे दूभि -धान,
आशीर्वाद -प्रतीक ,
बेटी के सौभाग्य बढ़ओ,
होउक सभटा नीक।

धान जीवन -आधार अछि,
धाने सँ धन -धान्य,
धान सँ बनि जाइत छथि,
सामान्य सँ गण्यमान्य।

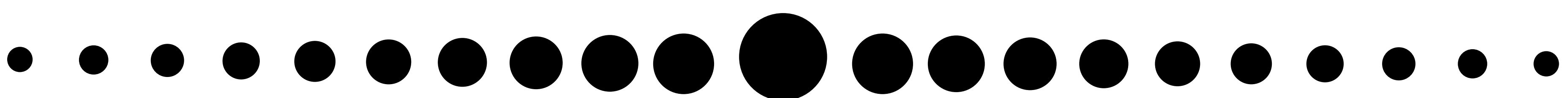
अर्थतंत्र मे धान के,
नमहर छै योगदान,
बजारक सूचकांक मे,
धानक मान, प्रधान।

दाना अछि त' धान अछि,
नहि त' अछि ई खखड़ी,
सुंदर फूल लगैत छै केहन,
उजड़ि जाए जँ पँखुड़ी?

अछि धानक स्वागत, सभ दोआरि,
धनिक, किंवा हो निर्धन,
भोजनक मुख्य आधार छै,
ई सुंदर अन्न, तंडुल -कण।

खेत जनैत अछि, धान कतेक
होइत छै ओकरा, प्रियगर,
कटनी के बाद, सजल शोभा
सँ हीन, होइत अछि एसगर।

जीवन -धन -आशीर्वचन,
सभ सँ जुड़ल अछि धान,
एहिना थोड़े भेटल छै,
ओकरा, ओहन सम्मान ?



7. सत ओ ' झूठ

दोख लगैत रहैत अछि झूठक,
सत पर बेर -बेर,
ग्रहण बाद, उगरास जेना,
सत चमकय ओहिना, फेर ।

मणि के मलिन कए सकैत अछि?
चढ़ाओल माटिक 'लेप,
अयस् कनक की भए सकत ,
धोएल जाए कतबो खेप?

मोसकिल, कखनो होइत छै,
चिन्हब मिथ्या -कपट -भेष,
होइछ कठिन कतेको के,
जानब एहि के, बिनु लगने ठेस।

रचि षड्यंत्र, जाए चाहैत अछि,
सत्तक' सात्विक गेह,
जोड़य जाइत अछि सत्य सँ,
अशुद्ध नेत सँ, नेह।

मिझरेबाक कोशिश करैत अछि,
चाहैत अछि, सत्य मे फेँटा जाइ,
छल सँ सत्तक'स्वत्व पर ,
सत्यक आखर सभ मेटा जाइ।

पर, सत्य क' चेन्ह होइत अछि,
पाथर पर रेघा पाड़ल,
की झाँपल जा सकैत अछि,
भास्कर इजोत जे बारल?

जखन धनुख सँ होइत अछि,
सत्य -वाण,संधान,
की झूठक मिथ्या -देह मे,
बाँचि पबैत अछि प्राण? ।

झूठक जा धरि जीवन रहैछ,
करैत अछि सत्य पर अत्याचार,
करैत अछि ओकर जड़ि खोध'लेल
दुरभि संधि ओ दुष्प्रचार।

झूठक अरुदा छोट बहुत,
मुदा, तंग करैछ भरि जीवन -काल,
जीत नहि सकैत अछि कहिओ,
पर, रहए ने दैछ ककरो खुशहाल।

धोखा देब, फरेब करब,
झूठक इएह अछि काज,
नीक लोक के तंग करब
सँ, अबैछ ने कखनो बाज।

राखए,नहि चाहैत अछि सत,
मिथ्या सँ कोनो सरोकार,
ओकर नेऔँत -पिहान के,
कथमपि ने करैछ स्वीकार।

जरा दैत अछि झूठ के,
निकलल सत्य सँ धाह,
आगि क' ताप पाबि कए,
जेना घमैत अछि लाह।

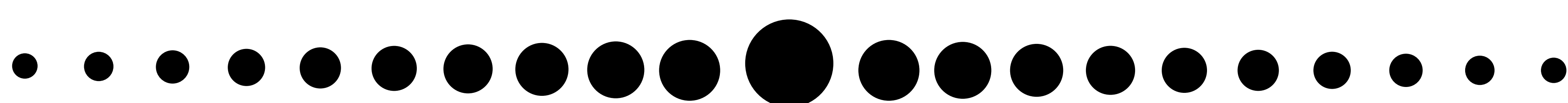
बहुत कठोर होइत अछि सत ,
आ, होइत अछि ई बड़ कड़ूगर,
एसगरे ठाढ़ रहैत अछि सदिखन,
चाही ने कोनो सोङर।

सत्य –सत्ता, अछि अटल,
आ, झूठ अछि क्षणभंगुर,
मिथ्या तन बाँचत कोना?
मरत 'त' झूठ जरूर।

जाहि सभा मे सत्य स्वयं हो,
आएल हो झूठ, लड़ए लेल ढूसि,
झुकिए जाइत अछि सीस सभ झूठक ,
कतबो ने किएक बैसल हो फूसि।

चलैत छथि जे, सत ध'क',
रहै छथि सदिखन ओ सकुशल,
मिथ्या -पथ पर चलए बला,
भाग्यो रहैत छै, ओकर रुसल।

काल -लेखनी सँ अछि लिखल,
सत्य, ब्रम्हांडक 'पटल पर,
सृष्टि ओ प्रलय, दूनू काल मे,
ई, अमिट, अकाट्य, अटल, पर।



८. अप्रदीप्त इजोत

पुष्प -कोँढ़ी मे, सञ्च -मञ्च,
बैसल अछि अति सुन्दर प्रसून,
कुसुमित होबए सँ अनठेने,
की पाबि रहल ओहि मे सुकून?

जाधरि नहि पुष्पित होएत ओ,
सुन्दरता कोना देखतै संसार?
गुण रहले सँ त' हेतै नहि,
जाधरि नहि हेतै ओकर प्रसार।

जखन हेतैक प्रस्फुटित फूल ,
मधुकर अओतए ताकए पराग,
हवा, सुगंध लए,सबतरि बँटतै,
गम -गम करतै पूरा बाग।

सौंदर्य देखि -देखि ओहि कुसुमक,
वर्णन करता श्रृंगार -कवि,
के नहि मोहित होएत बिलोकि,
फुलाएल पुहुपक, सुंदर छवि?

मुदा, के सजाओत बिआह -मंडप?
अपुष्पित फूलक माला सँ,
आ, के चुमाओत वर -कनिआँ के?
अकुसुमित फूल ध', डाला सँ।

प्रस्फुटित कुसुम सँ हार बनैत अछि,
बढ़बैत अछि कंठक सुन्दरता,
जाधरि रहता अपुष्पित ,ताधरि,
देवक 'सीस नहिए चढ़ता।

राखल -राखल त' गुण सेहो,
रहि जाइत अछि, ठामहि -ठाम,
फुलाएल फूल पसारै सुगंध,
पूरब -पच्छिम, दक्षिण -वाम।

पकैड़ लैत छै घुन क्षमता मे,
लेल ने जाए जँ कोनो काज,
बढ़तै गाछ, तखन ने अओतए ,
फूल –फल, इएह छै रेबाज।

जेना खाद आ पानि पड़ैत छै,
नमहर होइत जाइछ पादप,
ओहिना, गुणक ' विकास हेतु,
आवश्यक करब अछि कर्मक' तप।

लोक बिसरि जाइछ ओहि गुण के,
पुष्पित नहि भ' बनि सकल फूल,
ऋद्धि–पुष्प कैँ सभ देखैत अछि,
जग के रीतक' इएह अछि,मूल।

गुण के बीआ ,रहले सँ की?
जँ, बढ़ि क नहि भ' सकल गाछ,
मौलाएल –मेधा, कतए प्रशंसित?
सुनैत अछि ओ, अगबे कटाछ।

दीआ मे, टेमी, तेल सँ ,की?
जाधरि नहि बरत, निकलत इजोत,
की , देखाएत हूबा, नाविक के?
जाधरि नहि सिंधु मे उतरत पोत।

की होएत, गुण के रहले सँ?
जँ बढ़ल ने ओ, ने आएल काज,
जनितो नहि रचलक चारु चित्र,
के करत, ओहि चित्रकार पर नाज?

पड़ल -पड़ल मरि जाइत अछि मेधा,
भ' जाइत अछि, पूरा भोथ,
जे, आलस सँ नहि चलता -फिरता,
ओ त' हेबे करता लोथ।

के कहतन्हि वाक्ऋषभ हुनका?
मौका पर नहि होइ छन्हि बाजल,
के करतै ओहि गुण के बड़ाई?
गुण रहितहुँ जे अछि नहि माँजल।

ओहि फूलके, होइत अछि बड़ाई,
जे , फुलाएल, गमकल आ सुंदर,
जग गाबि रहल अछि विरुद-गीत,
जे गुणी संग, आ ओकर धुरंधर।

परिमार्जन बाद, बनैत अछि कंचन,
अहिबाती -सिउँथिक', चूड़ामणि,
पूर्ण द्युति सँ, चमकैत तखन छथि,
अबैत छथि जखन नभ -मध्य, तरणि।

ओ मेधा, जे बनि सकैत अछि
विश्व -क्षितिज पर ज्ञान -नक्षत्र,
जँ , बिन विकसित भ', पड़ल रहल,
ओँघड़ाएत रज मे, यत्र -तत्र।

की लाभ भेलै गुण रहलो सँ?
जे रहि गेल, अलसाएल, सूतल,
प्रभा -स्त्रोत, बिनु बरल, व्यर्थ भेल,
क' सकैत प्रकाशित, छल भूतल।

संघर्ष, विकास -यात्रा -पथ पर,
सहयोग, कुसुम बनि ,स्वतः उगत,
अड़चन , अन्हार बनि आओत त',
इच्छा -बल, इजोत -स्तम्भ, बनत।

राखले रहि जाइत अछि गुणक खान,
जँ नहि प्रयुक्त हो अवसर पर,
बिनु रेआज, होथि केहनो गायक,
भ' जाइत छन्हि भोथ, स्वर हुनकर।

सभ जनैछ, इजोत रखैत अछि,
तिमिर भगाबए के सामर्थ्य ,
दीप्ति-स्त्रोत जँ बारल नहि जाए,
तखन, इजोतक 'छै कोनो अर्थ?

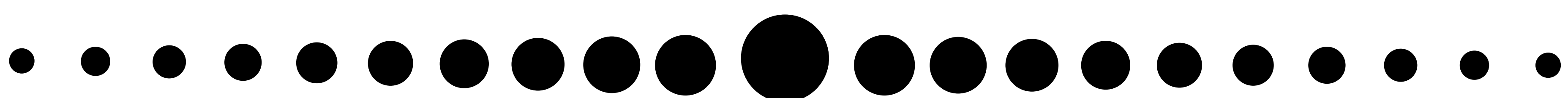
समचा रहला सँ की हेतै?
जँ कएल ने जाए, प्रज्वलित अनल,
एहि मे की दोख इजोतक'छै?
किओ कहतै, अपने किए ने बरल?

कखनो ने गुण के दोख छै,
दोषी त' अछि गुणधारक,
बैसा , गुण मे लगबै छै घुन,
बनबै छै दोषी, बेकारक।

दीप्त -इजोत, तैयार रहैत अछि,
लड़ए,सघन अन्हार सँ,
कतबो कुहेलिका पसरि जाउ,
नहि प्रभा दबत , ओहि भार सँ।

गुण रहितहुँ, जे गुण बढ़ि ने सकल,
मानव -मेधा के क्षति अछि,
सद्गुण बढ़ला सँ सभक लाभ,
आ, गुणक 'सेहो सदगति अछि।

प्रतिभा संगे अन्याय होएत, जँ
रहि गेल इजोत, अप्रदीप्त,
मेधा-क्षितिज पर चमकए बला,
रहि जेतै नक्षत्रक 'जगह, रिक्त।



9. कहू ,उपराग दिअइ ककरा?

लय तिमिर –पात्र, छी घूमि रहल,
भरबाक अछि ई इजोत सँ,
भरि क'जखने बन्द करैत छी,
तम भरि जाइछ, कोनो बेओँत सँ।

इजोत –अन्हारक –सम्बन्ध के
सोझराबय लेल कहिऐन्हि किनका?
एहि, ओझरोट के लेल पुनि,
कहू, उपराग दिऐन्हि किनका?

बादरि बिला गेलै हथिया मे,
छै सुखा रहल , खेत मे धान,
मेघ निपत्ता भेल, गेल कत '?
बरसय, दैक धान मे प्राण।

देखि लिऔ, छै केहन भेल?
जलवाहक अनसोहाँत, नखरा,
किनका कहिऐन्हि? की कहिऐन्हि?
कहू, उपराग दिअइ ककरा?

पूर्व कालक नीक कतेको,
टुटल जाइत अछि परम्परा,
नहि बुझाइत अछि, किनका कहिऐन्हि,
कहू ,उपराग दिअइ ककरा?

भैबाँट जमीनक अङकुर मे,
उसराही खेत 'पड़ल बखरा,
कहू, उपराग दिअइ ककरा?

लुक्खी गाछ पर आम खोधि,
अपने सँ करैछ, बाँट-बखरा
कहू, उपराग दिअइ ककरा?

अनुमानो ने भ' पबैत छै,
भ'जेतै कखन धरती -कंपन,
बजितो नहि छथि ,वसुन्धरा,
होइत छन्हि किएक, काँपय के मन?

किनका पूछिअन्हि? के, की कहता?
ई उपराग, किएक किओ सुनता?

बजओने बिनु, दुर्भाग्य आबि,
किएक बेसाहैत अछि रगड़ा?
हमरा दिस सँ नेओँत छलै की?
कहू ,उपराग दिअइ ककरा?

कएगोट अंधविश्वासक द्वारे,
डगमगाएल, मिथिला-माथक पाग,
वैज्ञानिक सोच अनसोहाँत छन्हि जिनका,
हुनकर दुर्भागक जागल भाग।

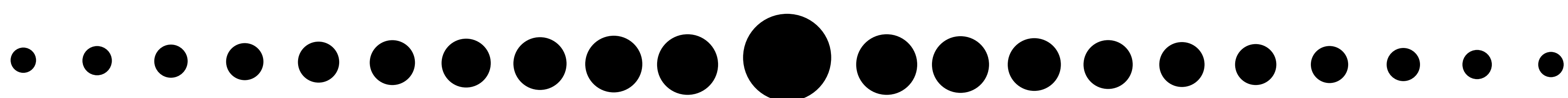
विज्ञान पर विश्वास नहि जिनका,
कहू, उपराग दिऐन्हि किनका?

तपत चाह पिबैत काल,
पाकि जाइत छन्हि मुह जिनका ,
अहीं कहू, ओ की करता?
जा क' उपराग देथिन्ह किनका?

तामि-कोड़ि खेत हम रोपलहुँ,
उगि गेल अपने सँ खगरा,
कहू, उपराग दिअइ ककरा?

सिनेह कतए सँ घोरि दिअइ?
तिलकोड़, माछ ,मखान मे,
गेल कतए ओ अपनैती?
परसाइ छल सभक दलान मे,

अपनैती, मोन, हिरदयक भाव अछि,
बढ़त कोना, कहिऐन्हि किनका?
कहू, उपराग दिऐन्हि किनका?



10.उपकार

स्वार्थ, लोभवश, सज्जनता के,
पकड़ि लैत अछि ग्रीव,
हिला देबए चाहैत अछि,
मानवता के नीव।

कतहु देखलिऐ माँग –पत्र ल '
घूमि रहल निज लेल, उपकार?
ओ त' अछि बैरागी, मन सँ,
ओकरा कथिक, छैक दरकार?

कोन पुण्य भारी अछि एहि सँ,
एहि पुरहर सँ, सुन्दर भृङ्गार?
अछि कोन फूल, एहि सँ सुन्दर,
बढ़ेलक, मनुषताक सिंगार?

जाहि पुण्य मय -क्षेत्र मे,
बहैत अछि उपकारक जल -धार,
ओहि सँ निर्मल पानि कतय,
पाबि सकैत अछि ई संसार?

काल कहिओ बिसरि सकैत अछि
ऋषि दधीचिक अस्थि -दान?
इतिहास मे अछि अंकित कतेको,
महान उपकारक प्रमाण।

उपकारक हरेक निवेश के,
होइत अछि एकहि उदेस,
बेसी सँ बेसी घटए,
मानवता क' कलेस।

उपकारक 'परिवार मे,
परहित, मदति, प्रभृति समाङ,
केवल सेवा-भावना,
सेवकक'नहि निज कोनो माँग ।

उपकार के नहि होइत छै,
स्वार्थ संग कोनो संधि,
सबतरि पसरैत रहैत छै,
जनसेवा -भाव -सुगंधि।

नहि आबि सकैत अछि, उपकारी -घर,
लोभ, क्रोध, मद, द्वेष,
अनुमति -पत्र ने पाबि सकैत अछि ,
किएक ने बदलि लिअए ओ भेष।

दया, क्षमा, उदारता, इएह सभ
छथिन्ह उपकारक ,'सर -कुटुम,
दोसरक भल करैत रहैत छथि,
अपना ऊपर सहिओक'जुलुम।

कतए भेटत उपकार? एकर,
निश्चित कहाँ पता अछि?
निर्धन या धनगर तरु पर,
कत' ,लतरल दिव्य लता अछि?

उपकार, जे देवत्व -भाव,
जिनकर व्यक्तित्त्वक बनै अछि अंश,
अनकर हित त' होइते छै,
होइत छन्हि अपनो, खूब भाभंस।

मनुष्यताक शीर्षस्थ विन्दु पर,
छथि बैसल उपकार ,
हिनक श्रेष्ठता, सर्वसम्मति सँ,
जगत् करैछ, स्वीकार।

उपकार त' अर्पण जनैत अछि,
ग्रहण नहि संस्कार मे,
अनकर संताप, अपन बुझैत अछि,
जनु, लिखल अपने कपार मे।

की लिखि सकब हम कागत पर,
उपकारक 'महान उदारता?
कहैत छिऐन्ह आकाश के,
ओ त' लिखब, सकारता?

उपकारीक कीर्ति, गूँजैत अछि,
सरङ, भूतल, पाताल मे,
चमकैत अछि जस के आखर ,
लिखल व्योमक' भाल मे।

लोक रहैत छथि असोथकित,
फिरीसानी उघैत अपन साती,
अनसोहाँत लगैत छन्हि सुनबो ,
अनकर दुःख क' एको पाँती।

के सकारत दुनिया मे,
अनकर दुःखक पठाओल साँठ?
उपकारी, निज माथ पर,
लै छथि, अनकर कष्टक गाँठ।

उपकारीक ' उदार –पात्र मे,
घटल कहिओ ने सिनेह ,
लोक क' आशीर्वाद सँ,
भरि गेल हुनकर, गेह।

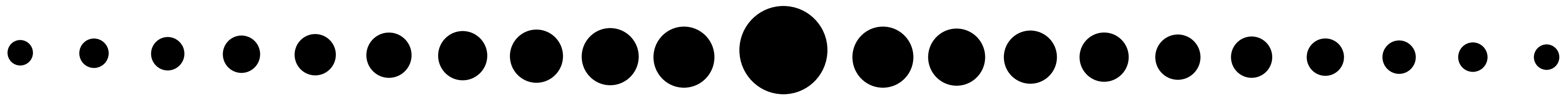
मनुक्खक सभ सँ श्रेष्ठ सोच
उपकार -प्रवृत्ति, ई अछि वरदान,
जिनका मे ई दिव्य -गुण,
वएह त' छथि असली विद्वान ।

किछु ने चाही बदला मे,
बुझि कर्त्तव्य, छथि काज करैत,
सुख पबैत छथि ओकर सेवा मे,
कष्ट सँ जे अछि कुहरैत।

बहराइत रहैत अछि उपकारीक
माड़रि सँ, दिव्य, अलौकिक तेज,
स्वार्थ ओ संकीर्णता,
आबए सँ ओतय, करैछ परहेज।

मन बैरागी, निष्काम कर्म,
प्रतिफलक ने कोनो आस,
परहित -सेवा, सर्वोपरि,
उपकारीक' विश्वास।

पीड़ा मेटला पर, दुखिया के
मुह सँ जे, बहराइत अछि बोल,
उपकारी लेल, आशीर्वचन,
ओकर, कोन सम्पत्ति देत मोल?



11.बिआह - वर्णन

हमर अभिन्न मित्रक 'बेटी के
बिआहक शुभ -दिन निजगुत भेल,
हमहूँ त' तकिते छलहुँ बाट,
आमंत्रण हमरो देल गेल।

पहुँचि गेलहुँ हम उचित समय पर,
सपरिवार, विवाह-स्थल,
जुमि रहल छलाह आरो गोटे,
रहथि , उत्सव मे नोतल।

दूरहि सँ छलै चमकि रहल
मुख्य दोआर के मस्तक,
सजल बिजुरी बल्ब सभ
बाट तकै, सूर्य अस्तक।

वृत्ताकार, वर्तुलाकार
मे नाचि रहल छल कृत्रिम इजोत,
छोट बल्ब सभ विविध रंग मे,
जेना, दैत छल प्रभा -नेओँत ।

भव्य तोरण दोआर लगैत छल,
परसि रहल हो स्वागत -भाव,
सिंह-द्वार क' शोभा सन,
ओ देखा रहल छल निज प्रभाव,

स्वस्ति-चिन्हित मंगल -घट
स्थित दोआरक दूनू कात,
शिष्टता सँ लिबल दुइ -जन
जेना लगै स्वागत् ,साक्षात् ।

दूर -दूर धरि कुर्सी -टेबुल
सजि-धजि पाँति लगओने छल,
पाहुन -परक, सुविधानुकूल,
निज -निज आसन पअओने छल।

ऊँच मंच छलै स्थापित,
लागल आसन ,वधू-वरक हेतु,
स्वजन -परिजन सँ बाँचल नहि
छल, जगह तिलो धरक हेतु।

ताकू ऊपर ,अकास नहि,
पंडाल सजल छल वृहदाकार,
कनकाभ -मंडित झूमर सभ
चमकि रहल, कतेको प्रकार।

जगह पाबि हम बैसि गेलहुँ,
बारिक सभ घूमथि बारम्बार,
अपना रुचि सँ लैथ लोक सभ,
बटाइत रहए जे स्वल्पाहार।

रमणीय छल वातावरण,
आमंत्रित पाहुनक भीड़ छल,
रंग -विरंग परिधान पहिरि,
परिचित सँ मिलए अधीर छल।

किछुए काल बाद, संगीतक
तुमुल -ध्वनि सँ उठल अनघोल,
वर -बरिआती आबि गेलाह,
बैंड -बाजा के, इएह छल बोल।

की नृत्य करैत छलैथ बरिआती?
आनन्द बरसि रहल छल,
रोम हर्षक शुभ -गीत -स्वर,
मांगल्य परसि रहल छल।

स्वागत मे, कन्यागत लोकनि
करए लगलाह मंगल -नाद,
आब, नारीगण सेहो शुरु
कएदेलखिन्ह वर -परिछनि -संवाद।

बैसि गेलाह वर, ऊच्चासन पर,
अएलिह कन्या, लेने जयमाल,
जयघोष भेलै, जयमाल पहिरि
भ' गेलथि प्रणय सँ दूनू नेहाल।

अतिथिलोकनिक हेतु आएल,
ई आवश्यक सूचना,
भोजन हेतु प्रस्थान करथि,
इच्छा भरि खाथि, अपना जेना।

छलै बुफे व्यवस्था, भोजन के,
अपने सँ परसि -परसि सभ खाउथ,
रंग -विरंगक भोजन लागल,
उत्तर भारतीय, वा साउथ।

भाँति-भाँतिक मिठाई सभ,
कतेको तरहक छलै व्यंजन,
कोन खाइ आ कोन छोड़ि दी,
एहि सँ होइ छल मन -गिञ्जन।

पंडित जी प्रारम्भ केलन्हि,
कन्यादानक प्रकरण,
बढ़ल बिधि आ संग होइत गेल
वैदिक मंत्रोच्चारण।

अग्नि-शपथ लए जिम्मा लेलन्हि,
कनिआँ -वर, दाम्पत्य जीवनक,
सुख -दुःख मे, संग निबाहए के,
ताकब उपाय सभ विघ्नक।

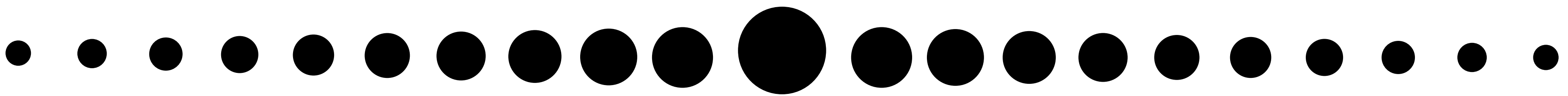
भ' रहल छल प्रणय गीत
उठैत छल भाव -तरंग,
लागि रहल छल प्रेम -रंग,
परिवेशक अंगे -अंग।

एहि अनमोल बंधन के
निबाहक अटूट प्रण छल,
जीवन -रण केँ जीतय के,
प्रतिज्ञा, तन -मन-धन छल।

वर -कनिआँ केँ श्रेष्ठ लोकनि,
भरि-भरि क' देलखिन्ह आशीर्वाद,
विदा भेलाह अतिथिगण द 'द',
आतिथेय के धन्यवाद।

ई मंगलमय वातावरण ,
छल दय रहल आशीष,
'अहिबात अखंड रहै सदा,
वर देथि जगत् के ईश। '

दए क' आशीर्वचन, हमहूँ
चललहुँ सपरिवार,
शुभ अवसर छल, भरल ,मोन मे
सुखक पारावार।



12.कहक' अहि

दुःखक 'बादरि जाहि मोन मे,
उठैत रहैत अछि घुमड़ि -घुमड़ि,
ओ मेघ तरल भ' नयन सँ
बनि नोर खसैत अछि झहरि-झहरि।

पानि भरल सरोवर मे,
कहाँ भिजैत अछि पुड़ैनि क' पात,
बिनु भिजने अन्हार सँ,
इजोत बहराइत अछि, बनि परात।

छल क' निमंत्रण -पत्र पर,
हर शब्द अछि षडयंत्र,
आ', 'निवेदन' क्रूर विपत्ति के
लिखल हाथ सँ पत्र।

अंधविश्वास जे पसरल अछि,
अछि, ईहो एक तरहक अपराध,
भ' जाइ एकर देहावसान ,
आ, सब मिलि कए दिऐ सराध।

अनकर विपत्ति के देखि कए,
होइत अछि मोन हर्षित जिनकर,
मद्दति पेबाक अधिकार नहि,
दुःख आबए जखन, हुनकर सिर पर।

नहि समान होइत अछि, सभदिन
अलग -अलग छै ढंग,
श्रृंग, रसातल आ समतल,
जगहेक सभ अछि रंग।

मानल जाइत अछि शिष्टाचार,
कोनो सभ्यता के राजदूत,
प्रथमहि सुन्दर परिचय सँ,
भविष्य -छवि, होइत अछि मजबूत।

औपचारिकता आवश्यक,
मुदा, रहैछ यथार्थ सँ दूर,
हँसब, घुघनो लटकल मे,
करइ छै इएह, मजबूर।

ढोंग पसारैत अछि भाभट,
बनि क' खूब, गड़ार,
भाभंसो किछु ने होइत छै,
आ, अंत मे होइछ देखार।

अजबारि लेथि ओ मोन के,
जिनका मे भरल अछि डाह,
नहि त' करतन्हि, धधकि -धधकि,
अपनहि सर्वस्व सुड्डाह।

इतिहास प्रमाण लए ठाढ़ अछि,
बुझबए लेल ई बात,
अन्हेरक 'जिनगी नहि रहलै,
बढ़ि क' राति सँ प्रात।

जा धरि, रहैत अछि इजोत,
नहि आबि सकैत, अछि अन्हार,
मुदा, इजोत जखन चाहए,
अन्हार के क' दैछ, बहार।

अपनैती सँ जीतल जाइछ मोन,
जीतल ने जाइछ बरजोरी,
मोम घमैत अछि पाबि धाह,
नहि घमत, कतबो खखोरी।

नहि जनैत छी, भविष्य -कोख मे,
अछि एकछाहे, फूल कि काँट,
मुदा, प्रकृतिक नियम इएह अछि,
अगबे दुःख ने, पड़ै छै फाँट।

मृत्यु -लोक मे कीर्ति टा,
कएने अछि अमृत -पान,
माटि क' घट, फुटि जाइत अछि,
मुदा, कीर्ति ने जाइछ मसान।

दुःख के द्वारा देल निमंत्रण,
की करतइ किओ स्वीकार?
मुदा, कुमति, जिनकर पोसल,
जा दैछ,विपत्ति , हकार।

सज्जनता -व्यवहार -पत्र,
अछि शिष्टाचार-मोसि सँ लिखल।
सुविचारक, उपकारक आखर,
मोती सन, ओहि पर अछि निखरल।

सत्य -खेत मे उपजल, सुख के
दाना मे अछि नैतिकता -स्वाद,
हितैषी आओर सदा मुदितकर,
कल्याणकारी, निर्विवाद।

आएल जखन अन्हर -बिहारि,
पकड़ि लेलहुँ हम धैर्यक खाम्ह,
नचिते आपस गेल, मुदा हम
भेलहुँ ने टस-मस, अपन ठाम।

विनाश, शांतिक दलान पर
आएल,कए क' विध्वंस,
शांति कहलि -'अएलहुँ बजबए ,
जखन भेलहुँ निर्वंश '?

बएन पठौलथि जे घर -घर मे,
अपनापनक' ओ आशीर्वाद,
बढ़ि गेलैन्हि मांगल्य हुनक घर,
भेलैन्ह ने कहिओ, कोनो हरमाद।

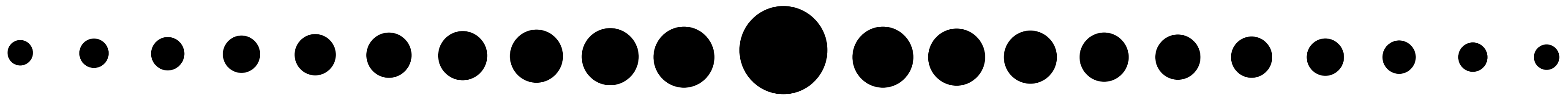
जिनकर करतब -कवच ओहन,
जे, होइछ अदिनता -घात, बेकार,
बदलब जनैत छथि भाग क रेघा,
लिखलो जँ दुर्दिन, हुनक कपार।

मनोरथ ककर ने होइत छै?
सदिखन रहए सुख संग,
पर, छुच्छे सुख भेटलै ककरो?
सूर्यो छथि, ग्रहण सँ तंग।

इजोत सँ टुटि जाइत अछि,
अन्हारक नमहर अहंकार,
प्रभा-परिधि मे हारल तम पर,
इजोत क' होइत अछि जयजयकार।

नभ-जलक विषम बटबारा सँ,
उठल मेघ पर, नमहर विवाद,
कतहु भूमि सुखाएल अछि
रौदी कतहु, कतहु आबाद ।

भू पर सुखलाहा मरुभूमि,
ई त' मेघ लेल अछि खिधांस,
अल्प -सींचल, व्यंग्य, आ
जत 'पूर्ण वृष्टि, से त' यशांश।



13.धोखा

विश्वास -दीप जरैत रहए,
देखब, कखनो ने मिझाइ,
अन्हर -बिहारि सेहो अओतए,
मुदा टेमी, जरिते जाइ ।

अछि ने ई सामान्य दीप,
ई बाती छै विश्वास क',
विश्वास -इजोत फल छै एकर
बर्खक बर्ख प्रयासक।

भरोसा क' मुख -मंडल पर,
होइत अछि नहि, छल -छद्मक' दाग,
सदिखन ऊँच रहैत छै मूड़ी,
सुशोभित ओहि पर निष्ठा -पाग।

अधिकार -पत्र ओ शपथ -पत्र
लए की करतै विश्वास?
ई अछि सुच्चा ओहिना, जहिना
अछि निर्मल आकाश।

मजबूत एहेन एकर बन्धन,
अटूट जतय विश्वास,
टूटि सकय नहि ई ता धरि,
जा धरि, तन मे श्वास

भरोसा के जे पात्र नहि,
सबतरि , पबैत अछि अपमान,
कतबो दस्तावेज दिआ देत,
विश्वास क' स्थान?

भाङ्गल विश्वास धोखा अछि,
शार्गिद जकर छै, छल -प्रपंच,
भरोसा तोड़ए के नेआर ,
षड्यंत्र करैत अछि ,सञ्च -मञ्च।

धोखा –क्षेत्र मे उगैत अछि,
विश्वासघात के शूल,
क्रूरता ओ कपट होइत छै,
एहि कैँ सभ सँ मूल।

हृदय छद्म –छल सँ भरल,
षड्यंत्र बनल, भुजदण्ड,
लोभ –कालिमा सँ पोतल,
कुटिल –मुह, महा प्रचण्ड।

धोखा –मुख, मीठ सँ भरल,
अछि ई परञ्च भुजंग,
अवसर पाबि कटबे करत,
देखा देत निज रंग।

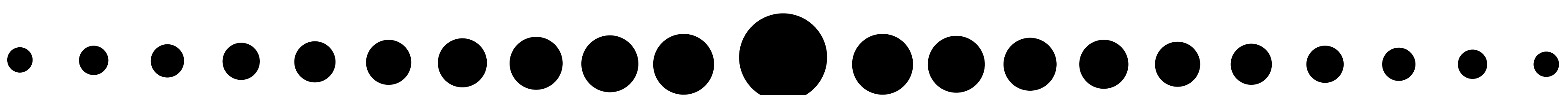
धोखा के अछि जे नगरी, ओ
मिथ्या माणिक्य सँ रहैछ सजल,
होइत रहैत छै सदिखन ओत '
षड्यंत्रेक कोनो चहल –पहल।

कनक –आसन सभ अछि बनल,
फुलाएल, कुटिल कपट –शतदल,
बनसी, मीन हेतु जेना पाथल,
भोजनो ओहिना अछि परसल।

अतिथि –सत्कार मे व्यस्त लोक,
किओ आर नहि, ओ सभ अछि शठ,
अवसर जखने भेट गेलै,
छोड़ैत नहि अछि, धोखा के हठ।

छद्म भरल एहि नगरी मे,
विश्वास क'रक्त बहाओल जाइछ,
मीठगर –मीठगर गीत गाबि, छल –
–विजय –उत्सव मनाओल जाइछ।

मुदा, कलंक विश्वासघात के,
साटल अछि जकर कपार,
के पतिआओत ओकरा पुनि,
के, करत पुनः ओकरा स्वीकार?



14 .नव - बसात

नव –बसात के बहए दिऔ,
आब, आबए नव –स्पंदन,
सड़ल, गन्हाइत जे अछि प्रवात ,
किए, करिऐ ओकरो वंदन?

जेतै आब, उत्साहहीन,
थाकल, ठेहिआएल बसात,
ऊर्जा चाही, ऊर्जित हुलास,
आ, धुंध–मुक्त चाही परात।

निरोग हवा के बाट छेकि,
किए बैसल किओ बुधिआर?
दुषित वायु सँ मोह किए?
जे करए जिनगी पर, वार।

बहए दिऔ, टटका बसात,
उत्साह, उमंग भरल छै ,
ताकि रहल छी कोन प्राण?
जे वायु, विवर्ण पड़ल छै।

सूँघि -सूँघि बान्हल हवा
सँ बढ़ि गेल तन मे व्याधि,
बेमार बसात के जाए दिऔ,
करबै की ओकरा, साधि?

नव -स्पंदन सँ, डरा जाए,
आ भागि जाए सनकल अन्हार,
छम -छम नचैत आबए परात,
जीतक' लगैक पावनि -तिहार।

आबए दिऔक नव-मौसम के,
शिशिर भेल बूढ़, अओतए मधुमास,
नव -नव चिंतन, नव जीवन -पथ,
टूटए ने,नवल-पुरातन-समास।

कतेक पुरान गिरह सभ के,
खोलत, ई नव -युग के बसात,
टटका विचार लए सिहकत, आ
दलाने -दलान, घूमत प्रवात।

गेलहे गीत कतेक गाएब?
लगाउ आब, नव -सुर के साज,
तूलिका मे नऽव रंग हो,
काज क' बात क' उठए अबाज।

नव -नव विषय,
नूतन चिन्तन,
गप हो उत्थानक',
किएक पतन?

हम छी तटस्थ, अरिआतए लेल
अएलहुँ अछि ,नवल -बसात के,
बितलै राति, स्वागत करिऔ
आब, आबए बला परात के।

व्यर्थ बात के धेने छी,
निरर्थक अंधविश्वास,
बेकाजक भेल रेबाज जे,
हम किएक बनल छी दास?

जे, सुन्दर , स्वस्थ परंपरा,
ओकरा बनाउ, सिर -पाग,
मुदा, किएक उघने चली ,
जे रीति बनल अछि दाग?

व्यर्थ, कुतर्क, घमरथन मे,
की लाभ? गमाओल जाए समय,
फरिछा सकैछ, जुआएल फसाद,
हो नव -चिंतन मे, मेलक 'लय।

जे रीति, निरर्थक घिघरी कटैछ,
ओ, समय -संग असंगत अछि,
किए, मोटरी ऊघी ,बेमतलब?
ई प्रगतिशील लोकक'मत अछि।

आनलक समीर संग मे हुलास,
नहि मोन ककरो , छै खनहन,
बंधन खोलि उन्मुक्त भेल,
अछि नाचि रहल, वातावरण।

बहकए नहि ओ, नूतन बसात,
सिहकय , त' झूमए गाछ -पात,
स्पर्श सुखद, अनुभव सब के,
टूटए आलस, लागए परात।

मुदा, सतर्क त' रहए पड़त ,
ई वात, कहुँ ने बनए उद्दण्ड,
चिन्हतो ने छिऐ, कहुँ विड़रो बनि,
देब ' ने लागै , दण्ड।

ई अबढङ नबका प्रवात,
ओ पीबए, सुसंस्कारक 'घृत,
अपन संस्कृतिक साँस पर,
रहए पड़तैक ओकरो आश्रित।

छुच्छे नवका बसात त' ,
ओ आओत बनि क' अनचिन्हार,
जे सभ ल'क' , चलल संग मे,
वएह आ ओहने हेतै विचार।

मुदा, धरोहरि मे पहिने सँ,
राखल जे,सुंदर संस्कार ,
जँ नहि अपनाओत ओहि के ओ,
लोक कोना करतै स्वीकार?

बनए बवंडर आगू चलि, जँ
नव्य पवन भ' उच्छृंखल,
नहि रोकू, ओकरा जाए दिऔ,
करतै, छुच्छे नूतन, की भल?

नवका बिहारि, की हो पुरना,
दुहू त', एकहि बात भेलै,
उधिएबे करब, एना की ओना,
विनाशे के त' बरिसात भेलै।

अलसाएल, ओझराएल प्रवात,
पेटकान्ह लधने अछि पड़ल ,
नवल अनिल स्पर्शन सँ,
असमञ्जस मे ओ , अछि अविरल।

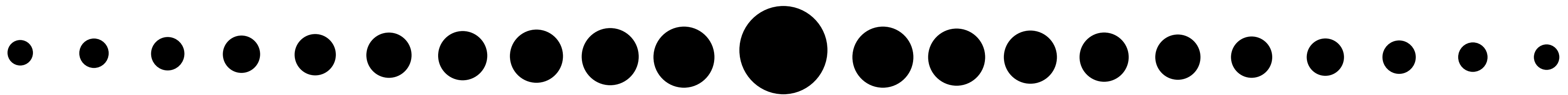
सामञ्जस्य नव -पुरान के हो,
सोझराउ बात, महोदय!
समायोजन, ने कि प्रतिक्रिया,
एक -दोसरक त्रुटि के धो दए।

संस्कृति सभक गठबंधन हो,
नव्य आओर पुरान,
खौंझाइ नहि एक दोसर पर,
आ, होइ मेल -मिलान।

स्वच्छन्दता, ई अछि बन्हाएल,
सदैव, उत्तरदायित्व संग,
विचारक नूतनता के मतलब,
होइ नहि छै, रभसल उमंग।

के छूटल अछि परिवर्त्तन सँ?
कहु, एहि नश्वर संसार मे,
मुदा, केहेन दिशा छै, बुझना
जाइत अछि जगत् -व्यवहार मे।

करिऔन्ह स्वागत, नवका के,
देथि पुरातन आशीर्वाद,
हिलि -मिलि, आगू बढ़ैत चली,
किएक हेतैक, कोनो विवाद?



15.सुखाएल पोखरि

छलै समय ओ जेठ-मास,
पानि छलै पोखरि मे शेष,
जल बिनु, जाठिक पाग खसै छल,
ओहिना झलकै मोनक क्लेश।

पोखरि जकर प्रतिष्ठा, जल सँ,
कादो मे ओँघड़ाएल छल,
माथा ओकर, थाल सँ पोतल,
बिनु जल नयन नोराएल छल।

के जनैत नहि अछि जगत् मे?
मीन-नीर सम्बन्ध,
माछ तड़पि,परलोक गेल,
आ, भेल ने जलक 'प्रबन्ध।

डीह-डाबर छोड़ि, कछुआ,
आन -ठाम लेल विदा भेल,
गैंची-माछ थाल मे डूबल,
रुकए लेल, जिदिआ गेल।

मोह भरल, डोका-सितुआ मे,
'तजि वास, ने जाएब आन ठाम,
दुःखो पाबि एतहि रुकि जाएब,
देखब पोखरि, करब प्रणाम। '

बिख सँ भरल भुजंग सभ,
भ्रमण करैत छल पोखरि मे,
किछु त' ओहि मे ,बिल तकैत छल,
आ, किछु गाछक खोधरि मे।

नमहर -नमहर डेग बढ़ाक ',
फूर्ती सँ निकसि गेल काँकोड़,
बहुत जोर तमसाएल छल,
छलै ,पानि बिना बड़ मोन घोर।

मारत थाल मे लोल चिड़ै?
आबि -आबि, आपस जाइत छल,
खगक 'निराशा देखि, गुमसुम,
नभ, डोका के, तकाइत छल।

खौंझा-खौंझा क' बेंङ कुदैत छल,
मुदा, छोड़ि ने सकल सूखल तड़ाग,
पोखरि लेल सिनेह ततेक जे,
ओकर सुख -दुःख,बुझए निज भाग।

चरि क' आएल छलि महीस,
औँघड़ाए गेलि ओहि थाल मे,
लागल जेना, सिनेहक माटि,
लगा लेलक निज गाल मे।

दुःख त' छलै फतिङ्गो के,
भरल पोखरि ओ देखने छल,
उड़ि-उड़ि, ओहि के ऊपर, ओ
देखैत रहैत छल, सूखल -तल।

अनमनस भेल, किनार मे,
जाल बुनैत छल मकड़ा,
वीतराग, वैरागी सन,
माया ने पकड़लक ओकरा।

परंपरा निर्वाह करैत,
अबैत छल भेँट करए माछी,
दैत छलैक, भरोस पोखरि के ,
' जुनि करु चिंता, हम सभ छी '।

पेटकान्ह लधने छल पड़ल,
जल -कुम्भीक' छोट समूह ,
निमित्त मात्र हरिअरी छलै,
छलै, लटकल कतबा मुह?

उगि आएल छल , घास -पात,
पाबि, सुखाएल भूमि,
कतहु -कतहु ,बड़की चुट्टी,
परिक्रमा करै छल, घूमि।

खसि, भीँड़ परहक गाछ सँ,
उधिआए रहल छल फूल -पात,
श्रद्धांजलि छल पाबि रहल,
तरु-समूह सँ, पोखरिक गात।

पोखरिक तल, थाल सँ सानल,
छल -प्रपंच के, आसन छल,
छद्म -महल मे षड्यंत्रक '
जनु, बनल सुंदर सिंहासन छल।

थलगर माटि, बनि गेल दलदल,
मोसकिल निकलब फँसि क',
करैत छलैक व्यंग्य, पोखरि के
दुर्दशा पर, हँसिक'।

भाग्य छलै रुसल पोखरि सँ,
जल -वैभव सँ नड़ाएल छल,
देह ओहिना छलै बाँचल,
परञ्च, जल -प्राण हेराएल छल।

जल –दरिद्रता सँ ग्रसित,
तड़ागक आँगन छलै, अन्हार,
सजल कंचन –घट सँ की?
नीर बिना होइत अछि बेकार।

पानि बिना छलै रुग्ण भेल,
पकड़ने होइक, जनु महाव्याधि,
केवल, जलक 'बिना, ने ओ
सकैत छल कोनो शक्ति, साधि।

वारि विहीन पोखरि मे, छल
भरि पोख भरल उदासी,
जनु, समदाओन गबैत छल,
सब मिलि, पोखरिक वासी।

एहन विपरीत समय मे, एकदिन,
उठलै बरजोर, गलञ्जर,
एहि बेर त'पड़तै अकाल,
भूमि , पड़ले रहतै बंजर।

आ, अबितहिँ नभ मे मेघ कोनो,
जल बरसओतै थोड़े-थोड़,
भाभट सँग घओना पसारतै,
तखन ,नयन सँ झहरतै नोर।

तड़ाग -मोन भ' गेलै अशांत,
पाबि झूठ -फूसि समाचार,
ओकरा ऊपर सद्यः ई छल,
मनोवैज्ञानिक अत्याचार।

किछु दिन बाद, अलह भोरे,
उमड़ल नभ मे कारी मेघ,
विलम्ब भेलैक, मुदा तैओ,
एलैक त' जलधर के दरेग।

बरसल खूब, झमाझम बरखा,
पोखरि मे किछु त भरलै पानि,
अखाढ़ो त' छलै आबि गेल,
आपस आएल कछुआ, ई जानि।

जेहने गीत अबै बेङ के,
जोर -जोर सँ छोड़लक तान,
भरल खुशी सँ सुना रहल छल,
भरि पोखरि के, अपन गान।

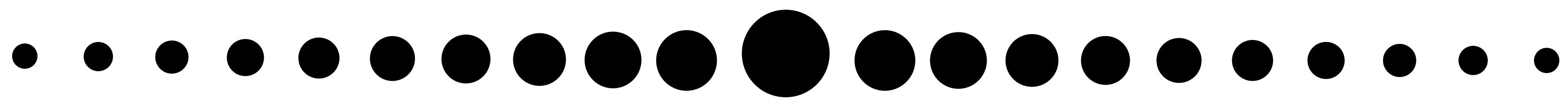
टुघरल -टुघरल काँकोड़ आएल,
पहुँचि गेल निज पूर्व -निवास,
भेलै खतम दुर्दिन, मोन मे,
उमड़ल छलै सुख बहुत रास।

पोखरि -सहजीवी सभ कैँ, पुनि-
-मिलन -सुअवसर, देल बरिसात,
आमोद -नृत्य होअए लागल,
आ, सिहकय लागल नव -बसात।

जेना-जेना, होइत गेलै बरखा,
भरैत गेलै सरोवर - उदर,
कतेको जीवक होइत छलै,
ओही पोखरि सँ गुजर -बसड़।

समय संग, ओहि पोखरि मे,
आएल माछ, उपजल मखान,
प्राप्त पुनः भेल पोखरि के,
जीवन, प्रतिष्ठा ओ सम्मान।

पोखरिक 'स्वास्थ्य-सौंदर्य द्वारे
कतेको रहथि गुमान मे,
घुमैत कतेको, प्रशस्ति-पत्र ल'
सरोवर के सम्मान मे।





रचनाकार क' परिचय :

नाओँ -राज किशोर मिश्र
गाम -अड़ेर डीह, पोस्ट- अड़ेर हाट,
जिला -मधुबनी (बिहार)
शिक्षा :बी. टेक (विद्युत),बीएचयू .आइ .टी
(वर्तमान मे, आइ. आइ .टी, वाराणसी)
वृत्ति :मुख्य महाप्रबंधक (विद्युत)
(अवकाश प्राप्त)
भारत संचार निगम लिमिटेड,
निगमित कार्यालय,
नई दिल्ली,
(इंजीनियरी सेवा परीक्षा, यूपीएससी-१९८२)
साहित्यिक कृति :
१-प्रवाहिनी (कविता -संग्रह, हिन्दी)
२-मेघपुष्प (कविता -संग्रह, मैथिली)
३-ऊर्जा -वर्णन (खण्ड -काव्य, हिन्दी)
(सन ;२०१९मे, एहि पुस्तक कैं 'इंडिया बुक ऑॉफ रिकार्डस' ,एशिया बुक ऑॉफ रिकार्डस एवम् वर्ल्ड बुक 'आँफ रिकार्डस द्वारा ऊर्जा पर प्रथम हिन्दी काव्य ' घोषित कएल गेल)

४-संवेग (खण्ड -काव्य, हिन्दी)
५-प्रदूषण(खण्ड-काव्य, हिन्दी)
(सन, २०२०मे, एहि पुस्तक के 'इंडिया बुक ऑफ रिकार्डस ' द्वारा 'कम्प्रहेनसिव डिटेल्स ऑफ पॉल्यूसन' पर प्रथम हिन्दी काव्य घोषित कएल गेल)
६-जल -संकट (कविता -संग्रह, हिन्दी)
७-पुष्परेणु (कविता -संग्रह, हिन्दी)
८-चाननि (कविता -संग्रह, मैथिली)

Awards:

1-Asian Education Awards ,2022
2-India Prime Awards, 2022
(Top 100 Authors)
3-SAARC Regional Brilliance Award, 2022(For Education)
4-Indian Achievers'Award -2021-2022

E-mail:nunu60533@gmail .com


चाननि